वार्तालाप– 428, हैद्राबाद (आं.प्र.), तारीख 26.10.07
Disc.CD-428, dated 26.10.07 at Hyderabad (Andhra Pradesh)

समय–25.48–26.35
जिज्ञासु – बाबा, मुसलमान लोग जितना मोहम्मद को मान्यता देते हैं उतना आदम को नहीं देते हैं।
Time: 25.48-26.35
Student: Baba, Muslims don't give the same importance to *Aadam* as they give to Mohammad.

बाबा – जो पुराना होगा वही पुराने को बहुत महत्व देगा। जिसने पुराने को देखा ही नहीं है उसके अंदर स्मृति कहां से आवेगी? जो और–और धर्म की आत्मायें होती है। वह परमधाम से बाद में आती है या शुरूवात में आती है? बाद में आती हैं। तो उन्हें बाबा आदम की बातें कहां मालूम होगी? सुना है इसलिए सिर्फ बोला हुआ है शास्त्रों में। बहुत लम्बी–चौड़ी कथा कहानियाँ आदम के लिए नहीं हैं। (किसी ने कहा – नहीं। खुदा के लिए, आदम के लिए बोलते हैं बाबा। आदम को खुदा मत कहो.....) बस सिर्फ बोलते हैं। इतनी जितनी कहानी मालूम हैं बस। (किसीने कहा– लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं है।) आदम अगर जुदा नहीं है तो साकार रूप को, भगवान को क्यों नहीं मानते? (किसीने कहा – आगे जाके मानेंगे) जो ढ़ाई हजार वर्ष के बाद मानेंगे उससे क्या फायदा? अंत में तो सारी दुनियाँ मानेगी। (किसीने कहा– हम मनवायेंगे। रूद्र माला का मणका है ना सूर्यवंशी।) अरे, जब मनवायेंगे जब सारी दुनियाँ मानेगी। तब माना तो क्या बड़ी बात हुई? जो पहले से माने, वो बड़ी बात हैं। (किसीने कहा– सारी दुनियाँ अंत की बात होती ना बाबा.....) सवाल मानने वालों से हैं। जो माननेवाले हैं वह ऊँचे कब कहे जायेंगे? अगर पहले से माने तो ऊँचे हैं या लास्ट में जब प्रकृति की मार पड़ी, धर्मराज की मार पड़ी, सरकार की मार पड़ी, वातावरण की मार पड़ी तब बरबस मान लिया तो क्या फायदा हुआ?
Baba: The one who is old (i.e. belongs to the older generation), only he will give importance to the old one. How will the one who has not seen the old one at all remember the old one? Do the souls belonging to other religions come from the Supreme Abode later on or do they come in the beginning? They come later on. So, how will they know about Baba *Aadam*? They have heard, that is why it has just been mentioned in the scriptures. There are not very long stories about *Aadam*. (Someone said – No, Baba, it is said about *Khuda*, about *Aadam* that '*Aadam ko khuda mat kaho*, i.e. do not call *Aadam* as God….) They utter these words just for name sake, only to the extent they know the story. (Someone said – *Lekin Khuda ke noor say Aadam judaa nahin*, i.e. But *Aadam* is not separate from the light of God) If *Aadam* is not separate, then why don't they accept the corporeal form to be God? (Someone said – They will accept in the future) What is the use if they accept after 2500 years? In the end the entire world will accept. (Someone said – We will make them believe. We are the beads of the *Rudramala*, the *Suryavanshis*, aren't we?) Arey, if you make them believe when the entire world believes, if they accept at that time, then what is the big deal in it? It is a big deal if they accept beforehand. (Someone said – As regards the entire world, it is a topic pertaining to the last period, isn't it Baba?) The question is about those who accept. When will those who accept be considered to be great? Are they great if they accept from the beginning or what is the use if they accept forcibly on being beaten by nature, on being beaten by *Dharmaraj*, on being beaten by the Government, on being beaten by the atmosphere?

समय–27.40–30.25
जिज्ञासु – ईश्वर साकार+निराकार को कहते हैं या सिर्फ निराकार को कहते हैं?
बाबा– 'ईश' माना शासन करने वाला। ईश्वर माना शासन करने वालों में वर। वर माना श्रेष्ठ। जो शासन करनेवालों में श्रेष्ठ हैं। बिंदी–बिंदी आत्माओं को कैसे शासन करेगी? और श्रेष्ठ और

निष्कृष्ट, ऊँच और नीच, ये साकार दुनियाँ की बातें हैं या निराकारी दुनियाँ की बातें हैं? साकार दुनियाँ की बातें हैं। तो ईश्वर कहा ही जाता है जब वह निराकार ज्योतिबिंदु साकार में प्रवेश करके सारे संसार को कंट्रोल करता है। जिस समय का गायन है – पत्ता भी तेरी सत्ता के बिना हिल नहीं सकता। खिले न कोई फूल।

Time: 27.40-30.25

Student: Does *Ishwar* mean corporeal+incorporeal or just the incorporeal?

Baba: *'Ish'* means the ruler. *'Ishwar'* means '*var*' (best) among those who rule *(ish). 'Var'* means righteous, the one who is righteous among the rulers; how will one rule point-like souls? And do the topics of righteous and degraded, high and low pertain to this corporeal world or the incorporeal world? These are the topics of the corporeal world. So, He is said to be *Ishwar* only when that incorporeal point of light enters in a corporeal and controls the entire world. It is praised about that time that 'even a leaf cannot shake without your authority. No flower can blossom (without your order).'

पत्ता माने मनुष्य सृष्टिरूपी झाड़ के 500, 700 करोड़ जो भी पत्ते हैं उन सभी पत्तों को, आत्माओं को, मनुष्य आत्माओं को एक टाईम ऐसा आता है कि ईश्वर के आदेश से ही हिलते हैं। सबकी बुद्धि में बैठता है, क्या बैठता है? जो अभी नहीं बैठता है सबकी बुद्धि में कि कदम–कदम पर श्रीमत लेकर चलना चाहिए। जिस कदम पर हमने श्रीमत नहीं ली मनमत पर चल पड़े या मनुष्यों की मत पर चल पड़े तो उस कदम में हमारी भूल निश्चित है, पाप निश्चित हैं। एक टाईम ऐसा भी आवेगा, दुनियाँ की हर मनुष्य आत्मा इस बात को समझेगी और मानने के लिए मजबूर हो जावेगी कि कदम–कदम पर श्रीमत पर चलने में ही हमारा कल्याण है सद्गति है। नहीं तो हमारी सद्गति हो नहीं सकती और हरेक मनुष्य आत्मा की सद्गति होनी है या नहीं होनी है? होनी है। तो मानेंगे तब सद्गति होगी या अपने आप हो जायेगी? मानेंगे। भले कोई डंडे से मानेंगे और कोई सहज–सहज मानेंगे। सद्गति सबकी होनी हैं।

Leaf means all the 500, 700 crore (5-7 billion) leaves of the tree-like human world; a time comes when all those leaves, those souls, human souls shake (i.e. act) only on the order of God. It fits into everybody's intellect; what? Whatever doesn't fit now into everyone's intellect, that we should take every step on *Shrimat*. The step for which we didn't take *shrimat*, we followed our own opinion or the opinion of other human beings, then committing a mistake in that step, committing a sin in that step is for sure. One such time will also come when every human soul of the world will understand and will be under compulsion to accept that our benefit, our true salvation lies only in following *Shrimat* at every step. Otherwise, we cannot achieve true salvation. Moreover, the true salvation of every human soul has to take place or not? It has to take place. So, will they achieve true salvation when they accept (the *Shrimat*) or will they achieve it on their own? They will accept. Although some will accept on being beaten by a stick and some will accept easily, everyone is going to achieve true salvation.

समय–30.26–33.48

जिज्ञासु – बाबा, शिव की बारात में लूले–लंगड़े सब नाचेंगे बोलके बताया बाबा, तो प्रैक्टिकल होगी या मनबुद्धि में होगी?

बाबा – लूले, लंगड़े का मतलब क्या है? (जिज्ञासु ने कहा– जो शिव बाप को पहचानते नहीं। बाबा को नहीं पहचानते।) अच्छा, रूद्रमाला के मणके हैं, बाप को नहीं पहचानते? लूले–लंगड़े का मतलब है लूले माने जिनकी बांह, भुजा काम नहीं करती। ज्ञान में तो चलते हैं; लेकिन ईश्वर के कार्य में कोई सहयोग रूपी भुजा, हाथ नहीं डाल सकते उनको कहते हैं लूले हैं। ज्ञान में तो चलते हैं; लेकिन लंगड़े हैं। पवित्रता का कोई भी, पवित्रता की दौड़ में, पुरूषार्थ की दौड़ में दौड़ नहीं लगा सकते। उनको कहते हैं लंगड़े।

Time: 30.26-33.48
Student: Baba, Baba has said that all the crippled (*looley*) and lame (*langdey*) persons will dance in the wedding procession *(baaraat)* of Shiv. So, will it be in practical or in the mind and intellect?
Baba: What does crippled and lame mean? (Student said – Those who don't recognize the Father Shiv, those who don't recognize Baba) OK, (is it possible that) they are the beads of *Rudramala* and they don't recognize the Father? Crippled and lame means; crippled means a person whose hand, arm doesn't function. They do follow the knowledge, but they cannot give the arm-like co-operation in the Godly task. They are called crippled. Those who do follow the knowledge but are lame. Those who can't make a run in any kind of purity, in the race of purity, in the race of *purusharth* (special effort for the soul), they are called lame.

अंधे। ज्ञान में तो चलते हैं; लेकिन ऐसे चलते हैं जैसे धृतराष्ट्र की औलाद हो। काने। कोई की दायीं आँख फुटी हुई है, कोई की बायीं आँख फुटी हुई हैं। दायी आँख फुटी हुई है माने गुणों को नहीं देखते हैं। अवगुणों को ही देखते हैं। तो भाँति–भाँति के रूद्रमाला के मणके हैं अपाहिज। देवता एक भी नहीं है अखंडित; इसलिए भक्तिमार्ग में जो खंडित मूर्तियाँ होती है उनकी पूजा नहीं होती हैं। इन रूद्रमाला के मणकों की पूजा कब होगी? जब विजयमाला में एड कर लिये जाए। इनकी बुद्धिरूपी आत्मा अपाहिज से सालिम बन जाये। (जिज्ञासु – शिव की बारात में नाचेंगे ये बारात प्रैक्टिकल है या....?) कोई मुख हिन विपुल मुख काहु। जो नाचना होता है वह ज्ञान डांस की बात है या स्थूल डान्स की बात है? ज्ञान डांस की बात हैं। अगर समझ लो कोई को आँखें ही नहीं हैं, तो हाथों से और टांगो से तो नाच सकता है ना! कोई को टांग ही नहीं है तो कम से कम जैसे की वह कलाबाज होते हैं टांगे ऊपर कर लेते हैं और हाथों से चलते चले जाते हैं तो हाथों से तो नाच सकते हैं। कोई को हाथ भी नहीं है, टांगे भी नहीं है तो आँखों से तो नाच कर सकते हैं। इसलिए दिखाया है कि वो ज्ञान का डान्स करने वाले हैं।
Blind. They do follow the path of knowledge, but they tread in such a way as if they are the children of *Dhritarashtra* (the blind father of Kauravas in the epic Mahabharata), (they are) one-eyed. Someone's right eye is missing and someone's left eye is missing. The right eye is missing means that they do not see virtues. They see only the bad qualities. So, there are different kinds of beads of *Rudramala* (the rosary of *Rudra*) who are handicapped. Not even one of them is a perfect deity. That is why, the impaired idols are not worshipped in the path of *bhakti* (devotion). When will these beads of the *Rudramala* be worshipped? When they are added to the rosary of victory (*vijaymala*), when their soul-like intellect transforms from handicapped to perfect. (Student – They will dance in the wedding procession of Shiv. Is this going to happen in practical or.....?) *Koi mukhh heen vipul mukhh kahu*. (Some are without heads and some are with many heads) As regards dancing, is it a question of the dance of knowledge or of physical dance? It is about the dance of knowledge. Suppose someone does not have eyes at all, he can dance with his hands and legs, can't he? If someone does not have legs, then they can at least dance with the help of the hands just as those artists raise their legs up and walk with the help of their hands If someone doesn't have arms and doesn't have legs either, they can indeed dance with their eyes. That is why it has been shown that they are those who perform the dance of knowledge.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.